वेदों की खुशबू ओ३म् वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 106	Year 15	Volume 02	Feb. 2022 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 150

ईश्वर है तभी तो यह सृष्टि है

क महात्मा श्रद्धालुओं के एक समूह को भगवान व उस तक पहुंचने के तरीके बता रहे थे, तभी सभा में बैठा एक नास्तिक, जिसका उद्देश्य लोगो का ध्यान हटाकर विघ्न डालना था, बोला 'महात्मन्! भगवान में ध्यान लगाने की बात तो तब आएगी, जब हम इस बात से आश्वस्त हों कि भगवान सचमुच में है।' महात्मा को उस व्यक्ति की मंशा समझते देर न लगी, पर वह क्रुद्ध होने की बजाये मुस्कराये व उस व्यक्ति से कहा कि वह एक सप्ताह के बाद उन से इसी स्थान पर मिले।

जो दिन तय किया गया था, उस दिन महात्मा एक खूबसूरत चित्र लेकर आये। चित्र इतना खूबसूरत था कि उसने सब का मनं मोह लिया। लोग बार–बार चित्रं को देखते थे। कुछ देर बाद जब लोग अपने स्थानों पर बैठ गये थे, तो वही व्यक्ति, जिसने भगवान की मौजूदगी के बारे में शंका जताई थी, बोला–'महाशय, यह खूबसूरत चित्र आप कहां से लाये है?' महात्मा ने ऐसे जाहिर किया जैसे वह अनभिज्ञ हों व बोले 'न जाने कहां से यह मेरे कमरे में टपक पड़ा।' वह व्यक्ति महात्मा के उत्तर से अविश्वस्त था, अतः बोला–जो आप कह रहे हैं वह विश्वास करने योग्य नहीं, जरुर कोई बहुत अच्छा चित्रकार है, जिसने इस चित्र को बनाया है। महात्मा मुस्करा दिये व बोले–शायद अब आप मेरी बात को समझेंगे।

उस व्यक्ति को सम्बोधित करते हुए महात्मा बोले– 'अगर आप इस बात से आश्वस्त हैं कि इस चित्र को बनाने वाला कोई चित्रकार जरुर है, तो आपके यह संदेह क्यों होता है कि इस विश्व, जिसका सौन्दर्य मन को मोहने वाला व हैरान करने वाला है, को बनाने वाला भी कोई बहुत बड़ा कलाकार है। जिस विश्व में हम रहते हैं, उस में अनगिनत पृथ्वियॉ, सूर्य, चन्द्रमा व सितारे है। जिस

Contact:
BHARTENDU SOOD
Editor, Publisher & Printer
231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047
Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2022-2024

पृथ्वी पर हम रहते हैं उसके सौन्दर्य की तो कोई तुलना ही नही है। एक ओर जहां गगनचुम्बी सफेद बर्फ की शाल ओढ़े पर्वत है, दूसरी ओर ऐसे रेगिस्थान हैं। जहां एक मिनट खड़े होकर ऐसे लगता हैं कि रेत का समुंद्र कहीं खत्म ही नहीं होता। लाखों तरह के मन को लुभाने वाले फूल, लताएँ, पेड़ व पौधे है।
झरने, हरी वादियॉ, झीलें व नदियॉ अपने सौन्दर्य से स्तब्ध कर देती हैं।'

इस कमरें की खिड़कियो में झूमते हुए गुलाबों को देखो, जिन की खुशबू यहां तक पहुंच रही है। कितनी कोमल हैं इनकी पंखडियां। रंगो की तो बात ही न पूछो – धूप हो या मूसलाधार वर्षा, इनके रंग फीके नहीं पड़ते। हम सब मिलकर एक वृक्ष नही बना सकते। अगर किसी कृत्रिम पदार्थ को बना भी लें, तो न तो वह बढ़ेगा, न उस पर फल लगेंगे।

'मनुष्य द्वारा बनाये गये वायुयान, जहाज व गाड़ियां अक्सर समय के अनुशासन से बाहर हो जाते है, पर उस भगवान द्वारा बनाई गई व्यवस्थाओं को देखो–पृथ्वी सदैव एक निश्चित समय में सूर्य के चारों ओर अपना फासला तय करती है। इसी तरह चन्द्रमा एक निश्चित समय में पृथ्वी के चारों तरफ अपनी परिधि को पूरा करता हैं।'

अगर हम अपने शरीर को ध्यान से देखें तो पता लगेगा' किस ज्ञानपूर्ण ढंग से उस परमात्मा ने इस की रचना की है। भीतर हाड़ों से उस परमात्मा ने इस की रचना की हैं। भीतर हाड़ो का जोड़, नाड़ियों का जाल, मांस का लेपन, चमड़ी की तह। हृदय, फेफड़े व प्लीहा किस तरह भोजन से रक्त को बनाकर, साफ करके सारे शरीर में भेज रहे है, किस तरह मलमूत्र का निष्कासन होता है व गुर्दे किस तरह एक छलनी का काम कर रहे हैं। किस प्रकार हमारा मस्तिष्क सारी इन्द्रियों के मार्ग को कार्यरत कर रहा है। यही नहीं, अरबों व्यक्ति इस विशाल पृथ्वी पर हैं, पर सब की शक्ल, सोच व कार्य की क्षमता अलग–अलग हैं। ऐसी अदभुत रचना भगवान ने नहीं की तो और किस ने की?

लगा कर हाथ कानों पर, करो कोशिश दवाने की,
तुम्हें आवाज आयेगी प्रभु के कारखाने की ।।

सदा दिन–रात चलती हैं मशीने कोन सी इस में,
उबलने की रगड़ने की, धवनी पिसने पिसाने की,
तुम्हें आवाज आयेगी प्रभु के कारखाने की ।।

ना गेंहू से न चावल से, न सब्जी से न दालों से,
बदन में खून बनता है, विधि क्या है बनाने की ।।

प्रभु के कारखाने में नसों का जाल फैला है,
करोड़ो नाड़ियां इसमें, नहीं ताकत गिनाने की।।

लहू से मांस–मज्जा सें, बने हड़ियों के ढांचे पर,
पलस्तर साफ चमड़ी का, कला देखो सजाने की।।

'नाना प्रकार की धातुओं से जड़ित भूमि, अति सूक्ष्म बीज से बड़े जैसे बड़े वृक्ष की रचना, असंख्य तरह के फूल–फल वनस्पति बताते हैं कि इस सृष्टि का रचयिता कोई महान शक्ति है।'

अन्त में अपनी वाणी को विश्राम देने से पहले महात्मा ने कहा –
जले स्थले च पुष्पेषु तथा प्रस्रवणेषु च। प्रभुर्न दृश्यते येन

Looking for a suitable Groom

For a 23 years well accomplished girl, B.Tech, passed out in 2020 and since then employed with IT major Infosys. At present placed in Chandigarh. Pure vegetarian and from Arya Samaj background. Family has a very simple living. Pl contact 9217970381 or bhartsood@yahoo.co.in

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 150 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दे
2. **आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–**
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFC Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFC Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFC Code - PSIB0000242**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया at par का चैक भेज दे।

या Google Pay No. 9217970381 या Paytm No. 9217970381

Way to be happy

Neela Sood

This incident is of the period when I was in a job, long ago. One of my colleagues was denied promotion despite his being very hardworking, sincere and, in my opinion, the most deserving of all.

Visibly glum and shattered, one morning, when he was sharing his agony with me, he received a call and all of a sudden his face lit up with joy and euphoria. After he had concluded his call, he looked exulted and exclaimed, “Madam, I thank God very much. I am very fortunate. One very good family has conveyed their okay to my proposal for my daughter's marriage with their highly eligible son.” Having said this, he went out.

After some time he was back with a packet of sweets and was distributing to all staff members with happiness radiating from his face. When he came to me with sweets, I said jokingly, “ Mr. Singh, is it not strange that only an hour ago you were shattered after having been denied a promotion; and now despite no change in that status, you are mad with euphoria.” His reply was “Madam, why should I think of that when God has given me another reason to be happy, after all my promotion is not above the happiness of my family and daughter. That promotion wouldn't have given me even half the joy that I have now.”

When Mr. Singh left, I went into a thinking mode for quite some time. For everyone, life is like this only; problems and bad news are in plenty and everywhere; but wisdom lies in taking note of small incidents of joy that too could bring happiness and touch our lives every now and then.

In fact, medically it is proved that the bad habit of remaining stuck to negative thoughts and allowing these to shield the radiance of good thoughts is extremely harmful for the mental and physical well being of the person. Neuroscience has proved that neurons in your brain are controlled by our thoughts. (Neurons are also called the nerve cells that constitute the brain, spinal column, and nerves, consisting of a nucleated cell body with one or more dendrites and a single axon.) Disease, death and other bad happenings are the part of life and happen with everybody. But, I've come across such persons who remain

stuck to their melancholy and carry their agony and feeling of sadness even to the person they visit, even if it is an occasion of celebration for that person. By doing this they make their sadness infectious whereas it should be the other way round. We should aim at making our happiness infectious.

Then, why not enjoy these moments of joy to douse the fire of sorrows. This very approach will make us happy and this world will appear to be a better place to live in. It is rightly said, “Wise person grows happiness under his feet.”

One should never choose to live by taking note of bad incidents only and then remain stuck to them. Real wisdom lies in learning to choose between the two.

पत्रिका में दिये गये विचार लेखकों के अपने हैं। सम्पादक जरूरी नहीं उन से सहमत हो । लेखकों के मोवाईल नम्बर दिये हैं, आवश्यक हो तो आप उन से सम्पर्क कर सकते हैं । न्यायिक प्रक्रिया के लिये चण्डीगढ़ ही मान्य है।

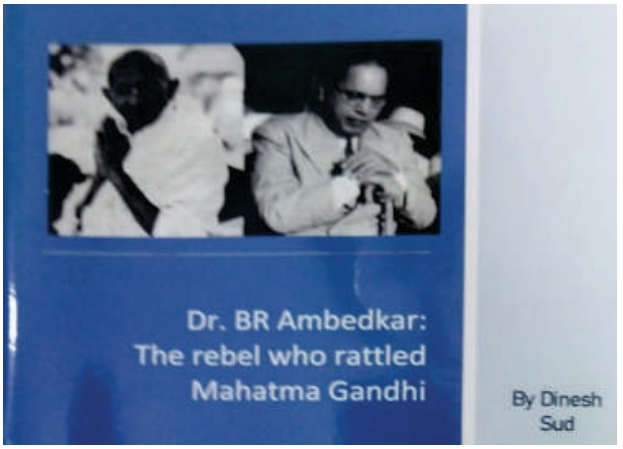

FOR THIS BOOK PLEASE CONTACT 9217970381, 08850930138 9417044481

विज्ञापन, अपने श्रद्धा सुमन Remembrance के लिए 9217970381 सम्पर्क करें

Editor, Publisher and Printer Bhartendu Sood. Printed at Amit Arts 36 MW, Industrial Area, Phase -1, Chandigarh. Phone No-0172-4614644 Place of Publication House No-231, Sector-45-A, Chandigarh-160047

वेदिक थोट्स सवसकराईव करने के लिए 9217970381 पर सम्पर्क करें

पुस्तक

(English Book of short stories---Our Musings)

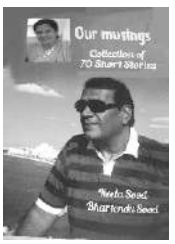

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी 70 छोटी कहानियों, जो कि अंग्रेजी समाचार पत्रों में समय समय पर प्रकाशित हुई हैं, का संग्रह एक पुस्तक में प्रकाशित किया है, जिसका नाम Our Musings है। इस पुस्तक की कीमत 150 रूपये है। जो भी इस पुस्तक को खरीदने का इच्छुक हो वह 100 रू भेजकर या हमारे बैंक ऐकाउंट में जमा करवा कर मंगवा सकता है। बैंक ऐकाउंट वही हैं जो कि वैदिक थोटस पत्रिका में दिये है। भेजने का खर्चा हमारा होगा।

कृपया निम्न बातों का ख्याल रखें,

पुस्तक ईगलिश भाषा में है।

पुस्तक केवल धार्मिक न हो कर जीवन के विभिन्न पहलुओं को छूती है

नीला सूद, भारतेन्दु सूद 9217970381

पत्रिका में दिये गये विचारो के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार है। लेखको के टेलीफोन न. दिए गए है न्यायिक मामलो के लिए चण्डीगढ़ के न्यायलय मानय है।

संस्कार

सीताराम गुप्ता

कई वर्श हो गए इस बात को। रमेष कुमार का पुत्र रजत पिंपरी में रहकर इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहा था। संयोग से रमेष कुमार के एक मित्र ने वहाँ एक फ़्लैट ख़रीदा था जो खाली पड़ा था। रजत एक साल तो हॉस्टल में रहा फिर पापा के मित्र के फ़्लैट में रहने आ गया। फ़्लैट काफी बड़ा था। रजत ने अपने तीन और मित्रों को भी रहने के लिए वहीं बुलवा लिया। कुल चार स्टूडेंट थे जो उस फ़्लैट में रहते थे। वहाँ घर जैसा आराम था। रमेष कुमार आगरा के हैं। उन्होंने एक व्यक्ति को खाना बनाने व दूसरे कार्य करने में ट्रेंड करके रजत के पास पिंपरी भेज दिया जो उसकी पढ़ाई के पूरे समय वहीं रहा। इसी दौरान रमेष कुमार भी कई बार वहाँ गए। एक बार रमेष कुमार वहाँ गए हुए थे। षाम के समय रजत के कई और मित्र भी आ गए। सबने वहीं पर डिनर किया। जब तक रमेष कुमार वहाँ रहे रोज़ यही देखते रहे। हर रोज़ कई स्टूडेंट वहाँ आते और डिनर करके ही जाते। उनकी बातचीत व षोर–षराबे के कारण बड़ी रौनक हो जाती थी।

रजत के सभी मित्र रमेष कुमार के साथ बड़े सम्मान से पेष आते थे। रमेष कुमार को यह देखकर भी अच्छा लगता लेकिन एक दिन जब रजत के सभी मित्र चले गए तो किंचित सख़्ती दिखलाते हुए उन्होंने रजत से पूछा, '' रजत तुम यहाँ इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने आए हो या ढाबा चलाने?'' इस बात पर रजत का चेहरा उतर गया और भारी स्वर में बोला, ''पापा ये सब भी मेरी तरह ही घर से दूर रहते हैं और प्रायः बाहर ही खाते हैं। बाहर जैसा खाना मिलता होगा आप अनुमान लगा सकते हैं। ये कभी–कभी इसीलिए यहाँ आ जाते हैं कि यहाँ घर का बना अच्छा खाना मिल जाता है।'' रजत के इस जवाब पर रमेष कुमार ने कहा, '' लेकिन तुम्हारा ख़र्च तो बढ़ जाता है ना और तुम्हारी पढ़ाई पर भी असर पड़ता होगा? बंद करो फालतू लड़कों का यहाँ रोज़–रोज़ आना और देर रात तक षोर–षराबा करना।''

रजत ने रोशपूर्ण लहजे में कहा, ''नहीं पापा मैं ये नहीं कर पाऊँगा। जब ये लोग आएँगे तो खाने के लिए पूछना भी पड़ेगा और ये खाकर भी जाएँगे।'' रजत की इस प्रतिक्रिया से रमेष कुमार को आत्मिक प्रसन्नता हुई। यदि रजत ये कहता कि जी कल से नहीं आएँगे तो उन्हें बड़ा दुख होता। रमेष कुमार के परिवार में जो कुछ अच्छी बातें थीं वो रजत में भी थीं और वो बाहर रहकर या समय के प्रभाव से बदला नहीं था ये देखकर उन्हें सचमुच असीम आनंद की अनुभूति हुई। जब रमेष कुमार ने रजत को बतलाया कि वो सीरियस नहीं थे अपितु मात्र उसकी प्रतिक्रिया देखना चाहते थे तो रजत के चेहरे पर आई प्रसन्नता ने रमेष कुमार की प्रसन्नता को और कई गुना बढ़ा दिया।

नुक़सान

डॉ0 विष्वास का आज इस नए हॉस्पीटल में पहला ही दिन था। पिछले सप्ताह ही उसकी एमडी पूरी हुई थी और एक सप्ताह के अंदर ही उसे एक सरकारी हॉस्पीटल में नौकरी मिल गई थी। हॉस्पीटल से लौटने के बाद विष्वास बहुत प्रसन्नचित लग रहा था। उसके चेहरे पर व्याप्त प्रसन्नता को देखकर उसके माता–पिता और उसकी बहन सभी बड़े ख़ुष थे। बहन ने कहा, ''लगता है भाई आप इस नौकरी व हॉस्पीटल के माहौल से ख़ुष हो।'' ''हाँ, हूँ लेकिन मेरी ख़ुषी का एक कारण और भी है,'' विष्वास ने कहा। ''क्या?'' घर के सभी सदस्यों ने एक साथ उत्सुकता प्रदर्षित की। विष्वास ने कहा कि आज पहले ही दिन दस हज़ार रुपए का नुक़सान हो गया। ''कैसे?'' पुनः एक समवेत स्वर उभरा। माँ ने जिज्ञासा प्रकट की, ''नुक़सान होने पर भी कोई ख़ुष होता है क्या?'' ''बात को घुमा–फिराकर कहने की बजाय सीधे–सीधे क्यों नहीं बतलाता कि क्या हुआ? मोबाइल खो गया? जेब कट गई? नुक़सान कैसे हो गया?'' पिताजी ने एक ही बार में लगातार कई सवाल कर डाले। नहीं, नहीं, आप घबराइए नहीं, ऐसा कुछ नहीं हुआ है विष्वास ने सबको आष्वस्त करते हुए कहा।

दरअसल आज एक एनजीओ ने एक फ़ैक्ट्री पर छापा मार कर वहाँ काम कर रहे कुछ नाबालिग़ बच्चों को छुड़वाया था। उन बच्चों की उम्र की जाँच करवाने के लिए पुलिस उन्हें लेकर डॉ0 विष्वास के हॉस्पीटल में आई थी। उसी दौरान डॉ0 विष्वास के रूम में एक आदमी आया और मेज़ पर कुछ रुपए रखते हुए बोला कि डॉक्टर ये दस हज़ार रुपए हैं इन्हें रख लो और अपनी रिपोर्ट में प्लीज़ सभी बच्चों की उम्र पंद्रह साल से ऊपर लिख दो। लेकिन उनमें से कोई भी बच्चा चौदह साल से ज़्यादा उम्र का नहीं लग रहा था। कई बच्चे तो दस–बारह साल के ही लग रहे थे। उन बच्चों की हालत देखकर ही डॉ0 विष्वास को बड़ा दुख हो रहा था। डॉ0 विष्वास ने नोटों का पैकेट उठाकर वापस उस आदमी के हाथ में देते हुए उसे फौरन बाहर निकल जाने का इषारा किया। जब उस आदमी ने कहा कि वह जितने चाहिएँ और रुपए देने को तैयार है तो डॉ0 विष्वास को ग़ुस्सा आ गया और उसने एक तरह से धक्का मार कर उसे बाहर कर दिया। डॉ0 विष्वास ने वही रिपोर्ट लिखी जो ठीक थी और एकदम सही उम्र का पता लगाने के लिए ऑसिफिकेषन टेस्ट के लिए सारे केस आगे रैफ़र कर दिए।

''तो हो गया न पहले ही दिन दस हज़ार रुपए का नुक़सान,'' डॉ0 विष्वास ने काल्पनिक गंभीरता के साथ कहा। ''बेटा ऐसा नुक़सान रोज़–रोज़ करके आना और हमें बतलाना। इसी में हमें सही ख़ुषी मिलेगी। मैं सचमुच बहुत ख़ुष हूँ कि हमारे बच्चे नुक़सान करना सीख रहे हैं,'' ये कह कर पिताजी ने विष्वास के दोनों हाथ अपने हाथों में ले लिए और विष्वास ने भी अपना सिर पिताजी के कंधे से सटा दिया मानो पूछ रहा हो कि नुक़सान करने के मामले में मैं आपसे से कम तो नहीं हूँ न?

ए. डी. 106–सी, पीतम पुरा, दिल्ली– 110034
मोबा0 नं0 9555622323

असामानता

गरीब मीलों चलता है रोटी कमाने के लिए,
अमीर मीलों चलता है उसे पचाने के लिए।
किसी के पास खाने के लिये
एक वक्त की रोटी नही,
किसी के पास एक रोटी खाने का वक्त नही।
एक लाचार है, इस लिये बिमार है।
एक बिमार है, इस लिये लाचार है।।
कौई परिजनों के लिये रोटी छोड़ देता है।
तो कौई रोटीं के लिये परिजनो को छोड़ देता है।

SWAMI DAYANANDREINVENED VEDAS WHICH SPEAK OF UNIVERSAL RELIGION

Neela Sood

Swami Dayanand Sarswati, the founder of Arya Samaj propagated universal religion in harmony with Vedic teachings . He had visualized Arya Samaj as the congregation/Sangathan of Aryas who believe in Vedic teachings and have conduct themselves accordingly. In line with sage Jaimimi's Mimansa school,he considered four Vedas as the repository of knowledge and truths, divine revelation and believed in the self-inherent authority of Vedas.

His doctrine of Universal religion gets demonstrated from the ten principles,

he made for the functioning of Arya Samaj. The Sixth Principle says, " doing good to whole World is the primary object of Arya Samaj i.e. to look to its physical, spiritual and social welfare of all irrespective of their origin, cast creed or religion." As one sees, emphasis is on considering the entire Universe as the family and to work for the good of all human beings.

Dharma according to Swami Dayanand is practice of equality, justice together with that of truthfulness in word, deed and thought .He advocated for the purity and conviction of one's own soul in the matter of conduct and dealings with others.What is good for you is good for others and what is painful to you is painful for others and this ought to be

the guiding principle of our conduct towards others. In the seventh principle he says, " Let thy dealings with all be regulated by love and justice in accordance with dictates of dharma".

Again, in Ninth Principle he says " One should not be content with one's own welfare alone but should look for one's own welfare in the welfare for all. As one can see Swami Dayanand's vision of individual's growth and development was directly linked with the inclusive growth what we are emphasizing today in the country in the face of burgeoning inequality.

His religious doctrine transcends walls of religion, sects and geographical boundaries.

Infect the Dharma what Swami Dayanand talked and preached was not a new faith or sect, it is what has been told in Vedas and is very rightly called Vedic Sanatan Dharma which is meant for all the human beings in the universe, as we have universal laws in jurisprudence. There is nothing in Vedas which applies to a particular group, faith or sect. Recitation or chanting of vedic hymns are meant to bring benefit to the entire universe, they are not directed at propitiating a particular god or to bring benefit to a particular person or community exclusively in the spirit of Sarve-bhavantu sukhina and Vasudhevaya Katumbkam . The inclusive and cosmic nature of Vedic Chanting is indicative of a universal approach to everything.

His conceptualization of God is contained in the second principle of Arya Samaj. There is one and only one God who is creator of this Universe and He controls it being Omnipotent. He is known by different names in accordance with his attributes. For example, he is called Indra because he is all powerful, Varuna-because he is greatest, Brahma- since he is the creator of whole Universe, Rudra-because he makes wicked suffer, Sarswati- because he possesses all knowledge and likewise he has hundreds of names in accordance with his qualities. But, there is only one God who permeates the whole Universe and Who is a true personification of existence, consciousness and bliss and He alone can free us of all pain and grief, if we follow the path of rectitude. He is Omniscient, Whom we feel in the interior of our hearts. He is Formless, Unborn, Infinite, all pervading and Omnipresent. He is not something "heavenly residing" He is right here and everywhere and within us also. We need to look within to be with Him.He believed that God, soul and Parkariti are beginingless and eternal substances. Creation & dissolution of the World, birth and death follow

each other in succession only God is ananant eternal

His vision of Arya Samaj was an association of good people who believed in the teachings of Vedas.Thus it will not be wrong to say that he talked of the Universal religion that draws inspiration from Universal dharma.

'Guru'

The 'Guru' has a dual role. First, to take the disciple on the right path and the second to save him from the wrong path by giving us the knowledge of right and wrong, but one has to first chose the right Guru and the right Guru is one who besides being altruistic scholar, must have risen above greed, anger, arrogance, attachment and lust and essentially should have an austere and frugal living. He should have little patience for falsehood and gloss, name and fame should not be his weaknesses. As one needs to test before buying any valuable so also a Guru needs to be tested. A man who knows the difference between a pebble and a piece of gold but can treat latter like the pebble can always be relied upon. But if a person is greedy, even with best of the knowledge of scriptures will not make him eligible for this venerated position.

प्रभु के दर्शन कौन पाता है

आहिंसा, सत्य, चोरी न करना, ब्रहमचर्य के नियमों का पालन, अपिरग्रह तथा शौच, संतोष आदि नियमों के पालन से ही आत्मा पवित्र होती है और शुभ कर्म में रत पवित्र आत्मा में ही प्रभु के दर्शन होते है।

उपनिषद में मन्त्र आता है जिसका भावार्थ है––जिसका मन बुरे विचारों से भरा हुआ है और अच्छे विचारों के लिये मन में कोई स्थान नहीं व अच्छे विचारों के प्रति विरोद्ध व अवेहलना है, जिसका मन हर समय बुरे कृत्यों में लिप्त रहने के कारण अशान्त, चिन्तित और व्याकुल रहता है, जो हर बात को हर चीज को सन्देह से देखता हो, जिसका मन चंचल है और कभी स्थिर नहीं रहता हो, ऐसा मनुष्य कभी भी ईश्वर को नहीं जान सकता।

अध्यात्मिक संदेश पहुंचाने में कहानियों का महत्व

मेरे जीवन में प्रभु कृपा से कुछ ऐसी बातें हुई जिन के कारण मैं अध्यात्मबाद से जुड़ा रहा । मैं स्वयं तो यह नहीं कह सकता कि इसका मेरे जीवन पर या मेरे चाल चलन पर कितना प्रभाव रहा क्यूंकि इसकी पहचान करने वालें तो वह हैं जो मेरे सम्पर्क में रहतें हैं, हां पर यह सच्चाई है कि मैं जन्म से ही कई कारणों से अध्यात्मवाद से जुड़ा रहा। इन में सब से मुख्य कारण था मेरा आर्य समाजी परिवार में जन्म और मेरे पिता जी का हर हालत में, हर मोसम में हर ऐतवार को सारे परिवार को आर्य समाज लेकर जाना। जब आर्य समाज जाता था तो अध्यात्मिक उपदेश, जो कि उस जमाने में एक घटें का होता था, सुनना ही पड़ता था। मुझे याद आता है कि उस उपदेश को सुनना बहुत अच्छा लगता था जिस में उपदेशक महोदय कहानियों का प्रयोग करते थे। आज भी मुझे वह उपदेश बहुत अच्छा लगता है जिस में भाषा आम आदमी की हो और जिस का संदेश छोटी छोटी कहानियों द्वारा दिया जाये।

इसी संदर्भ में मैं वेदों शास्त्रों का यह संदेश देने के लिये कि ईश्वर को ढूंढना है तो अपने अन्दर जाईये और जो सुख अन्दर में हैं वह बाहर के भौतिक संसार में नहीं, निम्न दो लघु कथायें, जो शायद आप ने पहले भी पढ़ रखी हों प्रस्तुत कर रहा हूं

,

अन्दर के अन्धेरे के कारण हम ईश्वर को बाहर ढूंढते है

संत राबिया सातवीं सदी में अरब देश में पैदा हुई सूफी सन्त थी । उसके जीवन से जुड़ी एक बहुत सुन्दर कहानी है। रबिया नें लोगों को यह समझाने के लिये कि ईश्वर सभी प्राणियों के अन्दर ही निवास करता है पर क्यूकिं इन्सान के अन्दर अन्धेरा है इसलिये वह उसे बाहर ढूंढता है, एक बार एक लीला रची। उन्होने अपनी झोंपड़ी के बाहर कुछ ढूंढना शुरू कर दिया। थोड़ी देर बाद वहां से दो सज्जन गुजरे। वृद्ध राबिया को यों परेशान देखकर, वे उनके पास जाकर पूछते हैं–––माता जी आप क्या ढूंढ रही हैं?

रबिया ने कहा––––मेरी सूई खो गई है। क्या आप उसे तलाशने मे मेरी मदद करोगे? वे दोनो सज्जन भी राबिया के साथ सूई ढुढने में लग गये। देखते ही देखते वहां भीड़ लग गइ, लेकिन कोई सफलता हाथ नहीं लगी।

तब उन मे से एक समझदार व्यक्ति ने पूछा–––माता जी, सोचकर ठीक ठीक बताओ कि सूई गिरी कहां थी? राबिया ने कहा,–––बेटा, सूई तो झोपंड़ी के अन्दर गिरी थी। यह बात सुनते ही वहां ऐकत्रित लोग बड़े गुस्से मे बाले–– तो फिर सूई बाहर क्यूं ढुढवां रही हो?

राबिया ने उतर देते हुये कहा––– बेटा अन्दर तो अन्धेरा है इसलिये बाहर ढूंढ रही हूं। समझदार व्यक्ति ने शांतं होकर कहा–––अरे माई, सूई जहां गिरी है वहां तो मिलेगी, यदि अन्धेरा था तो दीपक जलाकर प्रकाश कर लेती।

संत राबिया ने तुरन्त बोली––––– यही बात तो मैं तुम सब को समझाना चाहती हूं कि आज तुम ईश्वर को बाहर ढूढं रहे हो, जब कि वह हमारे सबसे निकट है, हमारे अन्दर ही विराजमान

है। परन्तु क्यूकी अन्दर अन्धेरा है इसलिये ईश्वर को बाहर ढूढं रहे हो। यह अन्धेरा इस लिये है क्यूकीं ठीक रास्ता नही मिला। ठीक रास्ता इस लिये नही मिला क्यूकी ठीक गुरू नही मिला। संत राबिया का कहना कितना सत्य है। अपने अन्दर के अन्धेरे के कारण हम ईश्वर को बाहर ढूंढ रहें है। कोई उसे खास मन्दिरों में ढूढंने जाता है तो कोई दरगाहों मे, कोई उसे पर्वतों की चोटीयों में ढूढ रहा है तो कोई गुफाओं में जब की शास्त्रों को पढ़ कर पता लगता है कि आज तक जिस किसी को भी परमात्मा की प्राप्ती हुई है वह अतंर्घट में हुई है। ईश्वर को बाहर ढूंढना अपनी छाया को पकड़ने कि कोशिश करने के सामान हैं। जैसे छाया हाथ नही आ सकती वैसे ही ईश्वर को बाहर ढूंढने से परमात्मा की प्राप्ती नहीं होती है। यह होता है मानव के अन्दर के अन्धेरे के कारण। यह अन्धेरा इस लिये है क्यूकीं ठीक रास्ता नही मिलता। ठीक रास्ता इस लिये नही

मिलता क्यूकी ठीक गुरू नही मिलता।

महान आत्माओं को भी रास्ता तभी मिला जब उन्हें ईश्वर की कृपा से ठीक गुरू मिल गया। देव दयानन्द भी पर्वतों की चोटीयों में, गुफाओं मे उस ईश को पाने में बहुत समय तक लगे रहे पर रास्ता उन्हें तभी मिला जब स्वामी विरजानन्द ने उन्हे वेदों का ज्ञान दिया। वेद कहते हैं––– अपने अन्दर झांको

आज का मनुष्य जब अशान्त हो जाता है तो उस परमात्मा को ढूढता है पर अज्ञान की वजह से बाहर ही ढूंढता रहता है व न मिलने के कारण और दुखी हो जाता है। वेद कहते हैं, कि वह परमात्मा समस्त सुखों की खान है, आनंद व शातिं का स्रोत है। पर उस की प्राप्ती उपने अन्दर ही होगी क्यूकीं वह सब के अंतर्घट में है।

सन्त कबीर ने बहुत सुन्दर कहा है

वस्तु कहीं ढूढे कहीं,
कही विधी आवे हाथ।
कहे कबीर तब पाइये,
जब भेदी लीन्हा साथ।

है कहीं, ढूढं उसे कहीं रहें है तो वह कैसे मिलेगा। इसके लिये तो किसी भेदी अर्थात गुरू का हाथ पकड़ना होगा।

वह कहां मिलेगा इस के बारे में कबीर कहते है

ज्यों नैनन मे पुतली,
त्यों खालिक घट माहि।
मूरखं लाग जाने नहीं,
बाहर ढूढंन जाही।।

अर्थात जिस प्रकार आखों मे पुतली है, वैसे ही परमात्मा भी इस शरीर रूपी घट के भीतर छुपा है। परन्तु मूर्ख अज्ञानवश उसे बाहर ढूढते हैं।

हमारे शास्त्र भी बताते हैं उस परमात्मा की प्राप्ती उपने अन्दर ही होगी क्यूकीं वह सब के अंतर्घट में है।

अन्नत सुख तो अपने अन्दर जाने में ही है

एक लक्कड़हारा बहुत मेहनत करके अपनी जीविका कमाता था व मुश्किल से उसका गुजारा होता था। उसे काम करते हुये एक सन्त देखा करता था। एक दिन वह सन्त उस से बोला––––जंगल के बाहर ही काम करने की बजाये जंगल के अंदर जाओ, तुम्हें एक दिन की मेहनत से ही पूरे महीने की जीविका के लिये आमदनी हो जायेगी। लक्कड़हारे ने वैसा ही किया जैसे कि संत ने बताया था । जगल के भीतर गया तो उसे चन्दन के पेड़ दिखे, और वह उनकी लकड़ी काट कर ले आया। उसे चंदन की लकड़ी के बेचने से पहले से कई गुना अधिक पैसे मिले। वह बहुत प्रसन्न था और उस ने संत का तहदिल से धन्याबाद किया।

संत ने उसे फिर से एक और सलाह दी––––– यदि तुम जंगल के और भी भीतर जाओगे तो तुन्हें एक दिन की मेहनत से ही छे महीने की जीविका के लिये आमदनी हो जायेगी। अपने पहले के अनुभव को देखते हुये लक्कड़हारे ने सोचने की भी जरूरत नहीं समझी और अगले दिन वह जंगल के और भीतर चला गया। उस की खुशी का ठिकाना न रहा जब उस की नजर चांदी की खान पर पड़ी। वह चांदी ले आया और उस ने संत का बहुत धन्याबाद किया।

संत ने उसे फिर से उसे सलाह दी––––– यदि तुम जंगल के और भी भीतर जाओगे तो तुन्हें एक दिन की मेहनत से इतनी आमदनी हो जायेगी कि तुमे जीवन भर कमाने की आवश्यकता नहीं होगी। अपने पहले के अनुभव को देखते हुये लक्कड़हारे ने सोचने की भी जरूरत नहीं समझी और अगले दिन वह जंगल के बहुत भीतर चला गया। उस की खुशी का ठिकाना न रहा जब उस की नजर सोने की खान पर पड़ी। वह सोना ले आया और अब उसे सचमुच कमाने की कोई आवश्यकता नहीं थी, वह ऐशोआराम से रहने लगा । वह संत का मन से बहुत आभरी था, परन्तु एक दिन बैठे बैठे उस के दिमाग में यह बात आई कि जब सन्त को यह सब पता है तो यह भिक्षुं का जीवन क्यों जी रहा है? क्यूं नहीं वह भी बहुत सा धन बटोर कर मेरी तरह ऐशोआराम की जीवन जीता।

वह संत के पास गया व बहुत विनम्र हो कर उस ने दिल की बात संत को बता दी। संत मुस्कराया और बोला–––देखो जो भी आपने जंगल के अंदर जा कर पाया है वह सभी बाहर का सुख देने वाली वस्तुएं है, अवश्य नहीं अन्दर का सुख व प्रसन्न्ता भी हो व दूसरा यह सभी छिन भी सकता है। परन्तु यदि आप ऐसा सुख व प्रसन्न्ता चाहते हो जो कि अन्नत है और कभी खत्म नहीं होती तो मेरी तरह ही इस बृक्ष के के नीचे बैठकर अपने अन्दर जाने की कोशिश करो और इस ब्रहमांड व इन सभी भौतिक वस्तुओं के बनाने वाले परमात्मा में ध्यान लगाना शुरू कर दो। कुछ समय बाद आपको स्वयं मालुम हो जायेगा कि मैं यह जानते हुये भी कि अन्दर सोने व चांदी की खाने हैं, अन्दर जाने की बजाये इस बृक्ष के नीचे बैठकर उस अन्नत ईश्वर में ही ध्यान क्यों लगाना पसन्द करता हूं।

PASSBOOK – REALLY GOOD ONE!

Pankaj Dogra

Priya married Hitesh this day. At the end of the wedding party,Priya's mother gave her a newly opened bank saving passbook with Rs.1000 deposit amount.

Mother: Priya, take this passbook. Keep it as a record of your marriage life.When there's something happy and memorable happened in your new life, put some money in.Write down what it's about next to the line.The more memorable the event is, the more money you can put in.I've done the first one for you today.

Do the others with Hitesh.When you look back after years, you can know how much happiness you've had.

Priya shared this with Hitesh on getting home.They both thought it was a great idea and were anxious to know when the second deposit could be made.

This was what they did after a certain time:

- 7 Feb: Rs.100, first birthday celebration for Hitesh after marriage
- 1 Mar: Rs.300, salary raise for Priya
- 20 Mar: Rs.200, vacation trip to Bali
- 15 Apr: Rs.2000, Priya got pregnant
- 1 Jun: Rs.1000, Hitesh got promotedand so on…

However, after years, they started fighting and arguing for trivial things.They didn't talk much.They regretted that they had married the most nasty people in the world…. no more love…

One day Priya talked to her Mother:'Mom, we can't stand it anymore. We agree to divorce.I can't imagine how I decided to marry this guy!!!'

Mother: 'Sure, girl, that's no big deal.Just do whatever you want if you really can't stand it.But before that, do one thing first.Remember the saving passbook I gave you on your wedding day?Take out all money and spend it first.You shouldn't keep any record of such a poor marriage.

'Priya thought it was true.So she went to the bank, waiting at the queue and planning to cancel the account.While she was waiting, she took a look at the passbook record.She looked, and looked, and looked.

Then the memory of all the previous joy and happiness just came up her mind.Her eyes were then filled with tears. She left and went home.

When she was home, she handed the passbook to Hitesh, asked him to spend the money before getting divorce.

The next day, Hitesh gave the passbook back to Priya. She found a new deposit of Rs.5000. And a line next to the record:'This is the day I notice how much I've loved you thru out all these years How much happiness you've brought me.'

They hugged and cried, putting the passbook back in the safe.

09814959215Pankaj Dogra is with panjab Police. He is a thinker and writer.

सम्पादकीय
लोकतन्त्र पर हावी होता विशैला वोटतन्त्र

कुछ वर्ष पहले इंडानेशिया के प्रधानमन्त्री ने टिपन्नी की थी कि यदि भारत में लोकतन्त्र कुछ कम होतो वह कहीं अधिक उन्नती कर लेता। देश के 29 सुबों में पांच में ही चुनाव हो रहें हैं, पर जो हम हालात देख रहें हैं उसे देखते हुये दिल नहीं करता कि मतदान द्वारा सरकार का गठन करने की व्यवस्था चलती रहें।मतदान प्रांतो में होना है परन्तु सब काम छोड़कर प्रधानमन्त्री व केन्द्रिय गृहमन्त्री प्रचार में लगे हैं। क्यूं नहीं इन सूबों के बिभिन्न दलों के नेता नेता आपस में ही निपट लें। इस में भी कोई बुराई न हो यदि यह बड़े नेता महोल को और विशैला न बनायें।

एक ही उदेश्य है कि मत कैसे प्राप्त किये जायें । इस के लिये यदि समाज धर्म, जाति के आधार पर बंटता है तो कोई बुराई नहीं। यह सच्चाई है कि यदि हमारा यह लोकत़न्त्र न होता तो जिस तरह हमारा समाज आज बंट गया है वैसा न होता। ईर्ष्या, द्वेष व वैमनस्य इस कदर घर न कर गया होता। देश सकल राष्टीय उत्पाद में नही तो कम से कम सकल राष्टीय प्रफुलता उत्पाद में बहुत उपर होता जैसा कि हमारा पड़ोसी देश भूटान, इस लोकतन्त्र से दूर रहकर है। एक बड़े भाजपा नेता नै समाजवादी दल पर यह दोश लगाया कि उनका समाजवाद नकली है तो उन्होने पलटवार किया कि आप कि देशभक्ति नकली है,यह चुनाव जीतने के लिये प्रयोग की जाती है। मेरी राय में दोनों ही ठीक थे।

कहने का अभिप्राय यह है कि हर एक चुनाव पिछले चुनाव की अपेक्षा अधिक विशैला होता जा रहा है और लोकतन्त्र को अपनी निरन्त्र विकास यात्रा का बहुत अधिक मूल्य चुकाना पड़ रहा है। चुनाव जीतने के लिये साम–दाम–दंड–भेद सब का प्रयोग उचित माना जा रहा है। दूर क्यों जाना, आपके अपने ही शहर चण्डीगढ़ में जिस दल ने सब से अधिक सीटें जीती थी उसकी सरकार बनाने के अधिकार को साम–दाम–दंड–भेद सब का प्रयोग कर शक्तिशाली दल ने छीन लिया। झूठे वायदे करने में तो कोई बुराई ही नहीं समझी जा रही ।यह तो चुनाव प्रचार का जरूरी हिस्सा बन गया है। महत्वपूर्ण यह है कि आप में मतदाताओं को लुभाने की कितनीं कला है, जिस में सब से अधिक कला है वही प्रधान मन्त्री या मुश्य मन्त्री बनने का हकदार है। झूठ फरेव

के बाण तो सभी छोड़ रहें हैं पर जीत उसी की है जो इस कला में निपुण है, प्रधानमन्त्री मोदी ने यह सिद्ध कर दिया है किवह राजनेता मूर्ख है जो यह सोचता है कि हम किये हुये वायदों को पूरा कर पायेगें या नहीं, आपका काम है वायदे करना और योग्यता इस में है कि आप कुछ समय के लिये लोगों को विश्वास दिला दें कि जो मैं बोल रहां हूं वही होगा। नैतिकता का राजनिती में कोई स्थान नहीं रह गया है। चुनाव की आड़ में गन्दे से गन्दे शब्द भी प्रयोग किये जा सकते है। हर दल का यही प्रयत्न होता है कि कैसे कोई मुदा ढूंढ कर समाज को बांट कर मत प्राप्त कर लिये जायें। हाल का ही कर्नाटक से आरम्भ हुआ हिजाब विवाद व मथुरा में मन्दिर का मुदा एक उदाहरण है।

हम भी इस वोटतंन्त्र के विशैले रूप को वैसे ही स्वीकार करते जा रहें है जैसे कि पुराने समय में नारी पर्दे में रहने की और अधिक से अधिक यातनाऐं सहन करने की आदी बन गई थी। हम इसी बात से प्रसन्न है कि हमें अपने मत द्वारा सरकार चुनने का अधिकार है, परन्तु हमें इस बात की बिल्कुल भी सोच या चिन्ता नहीं कि हमारे लिये विकल्प यही है कि हमें दो या तीन खराब व्यक्ति या दलों में से एक को चुनना है। इस विशैली व अति महंगी वोततन्त्र की व्यवस्था में अच्छे व्यक्ति के लिये कोई स्थान नहीं रह गया है। हमारे मनों में यह कूट कूट कर भरा जा रहा है कि लोकतन्त्र चाहे कितना भी विशैला क्यूं न हो फिर भी राजत़न्त्र से कही अच्छा है। परन्तु मुझे यह विश्वास है कि यदि अब्राहम लिंकन आज जीवित होता तो भारत में इस वोटतन्त्र को देख कर अपनी इस कथन पर ———लोगों द्वारा, लोगों के लिये, लोगों की सरकार वाली अपनी परिभाषा पर शर्मिदा हो रहे होते। जरा

सेचिये आपके मत की क्या कीमत रह गई ? ऐसे लोकतन्त्र की उपयोगिता के बारें में बुद्विजीवों को सोचना होगा वरना हम लोकतन्त्र नहीं गुण्डातन्त्र में रहने के आदि होते जायेंगे। यह गुण्डातन्त्र नही तो और क्या है कि चन्द मतों के लाभ के लिये राम रहीम जो दो खून व बलातकार जैसे अपराधों के लिये सजा काट रहा है उसे 21 दिन के लिये चुनसव के समय छोड़ दिया गया। कैसा लगता है जब सिंगापुर के प्रधानमन्त्री यह टिपन्नी करें की आज नेहरू के लोकतन्त्र में 60 प्रतिशत विधायक वह हैं जिन पर खून या बलातकार का आरोप है। हमारी सरकार ने इस को बुरा माना परन्तु अच्छा है हम आत्मनिरि्ाण करें ताकी लोगों का इस लोकतन्त्र से विश्वास कहीं उठ न जाये।

यदि आप 70 साल से अधिक के हैं तो ये परिर्वतन आप के सामने ही हुए है।

विवाह के बाद दादी आई थी पालकी में बैठ कर,
मां आई थी बैलगाड़ी में,
मैं कार में आई।
मेरी बेटी हवाई जहाज में,
मेरी नाती का कुछ पता नहीं कि वह इस को भी निभाये।।

कच्चे मकान में गुजर गई दादी की जिन्दगी,
पक्के मकान में रही मां,
मुझे मिला मोजक का घर,
बेटी के घर में मारबल,
पोती के घर में लगे हैं स्लैव ग्रेनाईट के।

दादी पहनती थी खुरदरे खदर की साड़ी,
मां की थी रेशम की साढ़ी,
मैने पहनी हर तरह की फैशनेवल साढ़ी,
बेटी पहनती सलवार कमीज और जीन और टाप
पोती पहनती है। स्किन फिटग और टी शर्ट।।

लकड़ी के चुल्हे पर खाना बनाती थी दादी,
मां की भी थी कोयले की सीगड़ी और हीटर,

मेरे हिस्से में आया गैस का चुल्हा,
बेटी की रसोई चलती है माईकरोवेवे ओवन से,
पोतीघर चलाती है आधा दिन डिव्वे के खाने से।।

दादा जी को बात कहने को दादी इंतजार करती थी सवेरे लालटेन के बुझने तक,
मां बात करती पिता जी से ऐसे मानो दीवार से बात कर रही हो,
मैं इन से बात करती ––अजी सुनते हो,
मेरी बेटी बुलाती है दामाद जी को नाम लेकर,
पोती आवाज लगाती है पति को–––हाये हनी।।

Mandarin's success in making China modern can be a lesson for India

China has the oldest written language in the world, but what is astounding and admirable is the periodic development in the language that has contributed to make China what it is today. China Modern by Jing Tsu is the story of how that subtlety was simplified and the language adapted to changing times. It is also a story of China's recent history and its passage to modernity.

The Chinese script doesn't follow the principles of the Roman alphabet – a few of its characters are pictograms, and they are all a mix of stroke patterns, radicals and tones that give or alter meaning.

At the start of 20th century China was smarting from imperial humiliation, itching to reinvent itself. 80% population was non-literate.People of various regions couldn't speak to each other due to the language barrier. Wang Zhao, a reformist started efforts to bridge the gap.. At that time Mandarin, which as on date, is the National language of China, was not a common language in the linguistically diverse country. Wang started taking steps to make it a common language acceptable to all people in the most populous country of the world. He standardized alphabets to make it simple that could be understood by everyone. His efforts succeeded and today Madrin is understood and spoken by everyone in China and more than one billion place it as their first language. Though it had its origin in North China but has been accepted with equal ease in all parts including the South.Zhao's next step was to create a keyboard for the Chinese language to have the same speed, efficiency and precision that Roman alphabet has. The Chinese typewriter was seen as a revolutionary machine.

This was not all, in the year 1950 Mao Zedong committee on script reform devised Pinyin, the system to transliterate into Roman alphabet. Pinyin was an enormous success and achievement as it enabled China to control its own engagement with the international system. With the result imperfect Peking has become Beijing. Literacy has jumped dramatically from 67% in 1982 to 97% in 2017. Even on literacy parameters, we are 50 years behind China as India is still struggling to achieve a 67% literacy rate, in the real sense. Today the Chinese script in all its variations flourishes on the internet and when China is vying to shape global standards in all areas of science and engineering, it has to thank the efforts of the genius like Wang Zhao.

India adopted a different path. It wants to live with linguistic diversity as there is a strong opposition to any one particular language being made the national language. If China had Wang Zhao we had the heavenly sent Bollywood which gave the dialect- Bambaiya Hindi , that is generally understood in most of the places and is accepted even by the Southern States. But our Hindi zealots could not digest the success of Bollywood. Unlike Wang Zhao they are always working on making Hindi Sanskritised, that can't be understood even by the Hindi knowing population. To pupulatise Hindi, it is imperative to free itself from the influence of Sanskrit.

सरोगेसी की मदद से माँ बनना किन हालात में ठीक है

कुछ समय पहले एक समाचार पढ़ा, पूर्व मिस वर्ल्डप्रियंका चोपड़ा सरोगेसी की मदद से माँ बनी।

न पेट बढ़ा, न स्तन फूला, न दर्द सहा, न बच्चे की आहट महसूस की, न भीतर ममता जगी बैठे बिठाए माँ बन गई, बनी कहाँ सिर्फ़ कहलाएगी।

माँ बनना ईश्वर की तरफ़ से स्त्रियों को दिया हुआ अनमोल उपहार है, सौभाग्य है। एक जीव को अपनी कोख में पालकर जन्म देना एक स्त्री के जीवन का सबसे बड़ा सपना और चाह होती है। गर्भ को अपने भीतर महसूस करना स्वर्ग के सुख से भी सुहाना एहसास होता है। अपने ही खून से सिंचे पिंड में जीव का संचार होते ही नन्हें–नन्हें, हाथ–पैरों की छुअन से उठती गुदगुदी अपने अंदर महसूस करना एक माँ को आनंद विभोर कर देती है।

महज़ अपने देह को कमनीय बनाए रखने की चाह में पैसों के दम पर इस अलौकिक सुख से कोई महिला कैसे वंचित रह सकती है। जिनके नसीब में ये सुख नहीं होता उनसे

पूछिए कि अपनी कोख में अपने अंश को पालना एक स्त्री के लिए कितने बड़े सौभाग्य की बात होती है।

अगर कोई दंपत्ति शारीरिक रुप से सक्षम है फिर भी किसी गैर की कोख का सहारा लेकर माँ–

बाप बनते है तो लानत है। करियर, स्टेटस और फ़िगर को संभालने के चक्कर में बच्चे से अपना हक छीनना सच में गलत बात है। माँ–बाप का अपने बच्चे से भावनात्मक रिश्ता तभी जुड़ता है जब नौ महीने उस एहसास से जुड़े रहें। स्पर्म और एग देने मात्र से बाप कहलाने का हक या माँ कहलाने का अधिकार किसी को कैसे मिल जाता है? 9 महीने का बलिदान जो एक मां शारीरिक रूप से कष्ट सहकर देती है तब वह माँ कहलाने योग्य होती है। एक पति जब इमोशनली 9

महीने अपनी पत्नी की पीड़ा को समझता है, उसके साथ–साथ हर कष्ट महसूस करता है तब वह बाप कहलाने योग्य होता है।

सरोगेसी तकनीक उन दंपत्तियों के लिए होती है जो बच्चे पैदा करनें में सक्षम नहीं

ऐसी परिस्थिति में एक ऑप्शन की तरह इस्तेमाल करने की बजाय आजकल सरोगेसी

को बिज़नेस बना दिया है। पैसों के दम पर अब एहसास भी बिकने लगे है।

सरोगेसी तकनीक के सहारे मां बननी वाली प्रियंका अकेली नहीं है। इससे पहले बॉलीवुड

एक्टेंस प्रीति जिंटा, शिल्पा शेट्टी, शाहरुख खान,आमिर खान, करण जौहर, एकता कपूर और तुषार

कपूर जैसे कई सितारे सरोगेसी की मदद लेकर माँ या बाप बन चुके हैं।

भारत में सरोगेसी के दुरुपयोग को रोकने के लिए तमाम नियम तय किए गए हैं। ज्यादातर गरीब

महिलाएं आर्थिक दिक्कतों के चलते सरोगेट मदरबनती थीं। सरकार की तरफ से इस तरह की

कॉमर्शियल सरोगेसी पर अब लगाम दी गई है। 2019 में ही कॉमर्शियल सरोगेसी पर प्रतिबंध लगाया गया था, जिसके बाद सिर्फ मदद करने के लिए ही सरोगेसी का विकल्प खुला रह गया है। कॉमर्शियल सरोगेसी पर रोक लगाने के साथ ही नए बिल में अल्टंस्टिक सरोगेसी को लेकर भी नियम–कायदों को सख्त कर दिया गया था।

पर नियमों की ऐसी–तैसी करते हुए आज बच्चे पैदा करने के झंझट से छुटकारा पाने के लिए

लोग सरोगेसी का सहारा ले रहे हैं। और गरीब और जरूरतमंद लड़कियां और औरतें पैसे कमाने का शोर्टकट अपनाते हुए सरोगेट मदर बनने के लिए तैयार हो जाती है। माँ बनने की प्रक्रिया भले

कष्टदायक होती है, पर उस अवर्णनीय एहसास का भी एक मजा होता है। माँ कहलाने से बेहतर है माँ बनकर देखें इस सुख के आगे दुनिया का हर सुख बेमानी है।

His courage to call a spade a spade separated him from others.

Bhartendu Sood

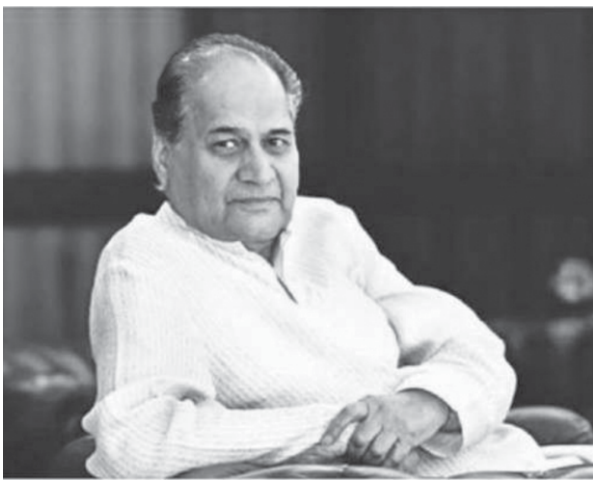

If wealth creation is the parameter Rahul Bajaj had not the meteoric rise like Ambani or Adani. In the matter of running the business by ethical means , he had many like Narayan Murthy of Infosys, who could be bracketed with him. Though known for community service & philanthropy he had people with better credentials like Azim Premji. But then one thing that separates him from others was his courage to speak his mind in the interest of the country and industry, whenever the situation demanded. And the best thing was that he never bothered how his frank opinion could affect his business fortune. He never wanted to be seen on the right side of the establishment, a rare quality which not many business honchos can boast of . Bajaj group was perhaps the only business house which had the courage to criticize Prime Minister Modi's unplanned and the toughest lockdown at a short notice of four hours in march 2020. His assessment about its impact on the economy, jobs and business turned out to be true and forced the government to take corrective steps.

Despite his stupendous achievement with Chetak brand Bajaj Scooter, in 70s of the last century, when the customers waited for years to get their favourite middle class family ride 'Hamara Bazaj', his humility had no bounds which gets reflected from the tributes he paid to another automobile stalwart late Brijmohan Lall Munjal on his death. He had no hesitation in admitting that late Mr Munjal was his Guru as without the advent of Hero with whom it was engaged in fierce battle for the top market place in 80's and 90's, it would not have been possible for the Bajaj group to come out with top quality product in the four stroke Motorcycle segment in the form of 'Pulsar' an iconic brand.. He took on fast emerging Hero bikes by constantly working on the quality of his product. No wonder today this Bajaj brand Motorcycle is exported to 79 countries including USA and in most of the countries it holds either number one or two positions and annual export exceeding 2.5 million.

Bajaj was hugely respected and admired in Business as well as political circles as he was brutally honest and selfless in the matter of giving his views. Highly Charismatic and knowledgeable, he was the one whose opinion and views were received with utmost respect by the governments of all hues as it was believed that he would never have his selfish motive in advancing any suggestion. He kept the country and the industry above his personal gains as a business tycoon.

On his death, the reactions of the readers and those who are associated with industry have one thing in common and that is the deep admiration for his penchant for giving bold and candid

views and uncompromising integrity in running the Business empire which saw him at the helm for six decades.

Today when everywhere we turn , there are signs of ethical deterioration and even the outstanding in their fields believe that they have to cheat to win and nice guys finish last, Rahul Bajaj can be a Role Model for the young brigade of entrepreneurs as success without ethics has the end what we saw in the case of Rana kapoor of Yes bank and kapil wadhwan of DHFL.

They should have said, 'Tax us more'

Considering these two developments, first, the year 2021 witnessed record 91% higher demand for Gold and second, the income of the richest 20% in India has gone up by whopping 39% in the last five years despite the two years of pandemic, in the face of 53% reduction in the income of the poorest 20%, one expected that these 20% in the top layer of income group will say,' tax us more'. But, after the announcement of the 2022-23 Budget by the Hon'ble Finance Minister, there is a general feeling of despondency among individual taxpayers that they have been left in lurch.

Only a few days back such a demand for higher tax levy was raised by the rich in France but in our country not even the likes of Mukesh Ambani and Adani want to follow them. Under this situation the finance Minister should have done upward revision of tax rates for individuals with annual income more than 1 crore, by 2% from 1 to 5 crore, 3% from 5 -10 crore, 5% from 10 crore to 50 crore and 10% above 50 crores.

पाठकों के पत्र

हृदेश गुलाटी

प्रिय भारतेन्दु जी,

सस्नेह नमस्ते

आपकी यह छोटी सी पत्रिका आर्यसमाज का बड़ा कार्य कर रही है। आर्यसमाज की वर्तमान निराशा,हताशा एवं आपसी वैमनस्य–विवाद जैसे अन्धकार में एक आशा का प्रकाशमान दीपक बनकर हमसब को अपने उज्जवल प्रकाश से प्रकाशित कर रही है। जन सामान्य को आर्यसमाज के सिधान्तों से वो भी इतने सरल, सरस तरीके से, यही इस पत्रिका की विशेशता मानता हूं। अक्सर पत्रिकाओं में बहुत गूढ़,भाषा कठिन, वेद मन्त्रों स`लेख को ठूसं ठूसं कर भर कर ;जिन्हें सामान्य की तो बात छोड़ो शिक्षित वर्ग भी नहीं समझ सकताद्ध शोध पत्र की तरह प्रकाशित कर रही हैं, जिन्हें केवल विद्वा नही समझ सकते हैं। आपकी पत्रिका का व्यवहारिक पक्ष है, हम क्या करें? कैसे रहें? कैसे जियें? मनुष्य के क्या कर्तव्य हैं? आर्यसमाज की क्या मान्यतायें हैं? परमात्मा क्या करता है? ससांर को प्रभु ने क्यों बनाया? हमारा

नैतिक,सामाजिक, धार्मिक व्यवहार कैसा हो? इन्ही धारणाओं,मान्यताओं से एक स्वस्थ,नैतिक,उन्नत समाज की रचना हो सकती है। यही महर्षि चाहते थे।

पत्रिका की दिन दुगनी रात चौगुनी उन्नति की शुभ कामनाओं के साथ,

आपकापठक,

क्रोध त्याग

नरेन्द्र आर्य 'विवेक'

क्रोध एक ऐसी आसुरी तामसिक वृति है जो दूसरों का नाश करने के स्थान पर स्वयं करने वाले को ही नष्ट कर देती है । क्रोध की अग्नि में क्रोधी स्वयं जलकर राख हो जाता है और जिस पर क्रोधी गुस्सा करता है उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ पाता । इसीलिए क्रोध को समस्त बुराइयों और लड़ाइयों की जड़ कहा कहा गया है । क्रोध स्वयं क्रोधी के शरीर को जलाता है, हृदय को तपाता है, व्याकुलता को बढ़ाता है । संस्कृत के किसी कवि ने ठीक ही कहा है

क्रोधे नाश्यते धैर्य , क्रोधे नाशयते श्रुतम् ।
क्रोधे नाशयते सर्वं , नास्ति क्रोध्समो रिपुः ।।

अर्थात क्रोध धैर्य, विद्या, शास्त्रा ज्ञान बुद्धि विवेक और क्रोधी के सर्वस्व का नाश कर डालता है । क्रोध के समान दूसरा शत्रु नहीं है ।

वेद भगवान ने अथर्ववेद में क्रोध त्याग करने का स्पष्ट आदेश देते हुए कहा मा क्रुधः ।। अथर्ववेद 11/2/20 अर्थात क्रोध मत कर ।

चाणक्य महाराज ने क्रोध को यमराज कहते हुए कहा है कि क्रोध से मनुष्य की बुद्धि नष्ट हो जाती है और उसका विनाश होता है । विदुर नीति में भी काम क्रोद्ध लोभ को आत्मा का नाश करने वाले नरक के तीन द्वार बताया है और तीनों का त्याग करने की शिक्षा दी है ।

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः ।
कामः क्रोध्स्तया लोभस्वस्मादेतत्त्रायं त्यजेत् ।।

एक बार एक दम्पति अपने छोटे बच्चे को कमरे में सोता छोड़कर चले गए । कुछ देर बाद जब वापिस लौटे तो देखा कि कमरे के अंदर से बाहर तक रक्त की धर बह रही है और उनके पालतू नेवले के मुख पर भी खून लगा हुआ है । यह दृश्य देखते ही मां को लगा जैसे नेवले ने बच्चे की हत्या कर दी हो और उसके मुख पर बच्चे का खून लगा हुआ है । यह विचार मन में आते ही मां जोर से विलाप कर उठी और बोली ''हाय रे ! हत्यारे नेवले ने मेरे बेटे को मार डाला ।'' पत्नी का विलाप सुनकर पति को क्रोध आ गया और उसने बिना विचारे नेवले को मार डाला । नेवले को मार कर जब दम्पति कमरे में घुसा तो दृश्य देखकर असलियत जानते ही पश्चाताप की अग्नि में जलने लगा । अंदर बेटा बड़े आराम से सो रहा था और पास ही एक विषध्र सांप मरा पड़ा था । नेवले ने विषलै फनियल सांप से लड़कर उसे मारकर बच्चे की रक्षा की थी । नेवले के मुख पर सांप का खून था । हाय यह हमने क्या किया हम अपने बच्चे के रक्षक के भक्षक बन गए यह सोचकर दम्पति पश्चाताप की आग में जलने लगा । पर अब पछताय होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत ।

शायद इसीलिए अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधे ने क्रोध को पगालपन कहा है और राष्ट्कवि मैथिलीशरण गुप्त कहते हैं ''क्रोध आने पर व्यक्ति विचार शून्य हो जाता है'' । क्रोध मस्तिष्क के दीपक को बुझा देता है और क्रोधी की बुद्धि काम करनी बन्द कर देती है उसके सोचने की शक्ति नष्ट होने से वह विवेकहीन हो जाता है । हम कह सकते हैं कि क्रोद्ध मूर्खता से प्रारम्भ होकर पश्चाताप पर खत्म होता है ।

क्रोध मनुष्य की कमजोरी को दर्शाता है । मनोचिकित्सक बताते हैं कि कमजोरी के कारण उत्पन्न हुई हताशा की स्थिति में व्यक्ति में क्रोध उत्पन्न होता है और क्रोध की अवस्था में मनुष्य के शरीर में विशेष प्रकार के हारमोन का स्राव होता है जिससे उसके बुद्धि तत्व उस समय काम करना बंद कर देते हैं और व्यक्ति विचार शून्य विवेकहीन और अन्ध हो जाता है । क्राद्ध की अवस्था में मनुष्य में अपने भले बुरे के विचार की शक्ति भी नहीं रहती ।

क्रोध की सर्वोतम औषधि विलम्ब है । क्रोध की अवस्था में मनुष्य को कोई कार्य नहीं करना चाहिए अपितु कुछ देर तक रूक कर मन मस्तिष्क के शांत होने पर विचार करना चाहिए । विनय भाव और प्रेम ऐसे जल के छींटे हैं जो क्रोध की आग को शांत कर देते हैं । यदि उपर वाली कहानी में दम्पति ने क्रोध की अवस्था में धैर्य से पहले सब देख लिया होता तो वे रक्षक के भक्षक बनकर पश्चाताप करने पर विवश ना होते । क्रोध की सर्वोतम औषधि अपने आप को शांत रखना है।

गुरू धारण करें पर परख कर

महात्मा आनन्द स्वामी

एक बार महान सन्त दादू किसी नये स्थान पर चले गये व नगर से दूर किसी विरान जगह पर ठहर गये। ज्यों–ज्यों लोगों को पता चला त्यों त्यों वे उस विरान जगह पर आकर ही प्रभु भक्ति का अमृत पीने लगे।

शहर के कोतवाल को जब पता चला कि दादू नाम क सन्त आये हुये हैं तो उस के मन में भी आया कि चल कर उस महात्मा के दर्शन करने चाहिये। अपने घोड़े पर चड़कर कोतवाल महोदय दादू सन्त को मिलने चलपड़े। काफी दूर आ गये पर कोतवाल को दादू सन्त न दिखाई दिये। आगे कुछ दूर जाने पर एक दुबला पतला व्यकित दिखाई पड़ा जिसने केवल एक लगोंटी पहन रखी थी। वह मार्ग की झाडियों को काट कर फैंक रहा था ताकि मार्ग साफ हो जाये। कोतवाल ने उसके पास जाकर पूछा––''अरे ओ भिखारी! तुझे पता है दादू सन्त कहां रहते हैं?''

उस व्यकित ने कोतवाल की और देखा पर कुछ बोला नहीं। कोतवाल ने समझाा यह बहरा है, चिल्लाकर बोला, ''अरे मूर्ख! मैं पूछता हूं दादू कहां रहता हैं?''

इस बार उस व्यक्ति ने कोतवाल की तरफ देखा भी नहीं और अपना काम करता रहा।

कोतवाल को क्रोध आया। जिस चावुक से वह घोड़े को चलाता आया था उसी से उस व्यक्ति को मारने लगा। चावुक से उस व्यकित के शरीर पर निशान पड़ गये पर तब भी वह व्यक्ति न बोला। क्रोधित होकर कोतवाल ने चाबुक का डण्डा उस व्यकित के सिर पर दे मारा और चिल्लाकर कहा–––'' हां या नहीं भी कह सकता? परन्तु वह व्यकित फिर भी न बोला। उसके सिर से रक्त वह रहा था पर इसका कोतवाल पर कोई असर न था।

कोतवाल ने सोचा जो व्यकित इतना कुछ होने पर भी न बोला वह ज़रूर गूंगा बहरा आर पागल है, और वह आगे निकल गया। कुछ दूर जाने पर एक और व्यक्ति मिला। कोतवाल ने उस व्यक्ति को रोक कर उस से भी दादू कापता पूछा।

''आपको इसी मार्ग पर पीछे दिखाई नहीं दिये, मैं तो अभी उन से मिलकर आया हूं। वह झाड़ीयां काट रहे थे ताकी इस मार्ग पर आने वालों को मुश्किल न हो''–––उस व्यक्ति ने कहा।

कोतवाल ने आश्चर्य से मुंह फाड़कर कहा,–––'' उस लगोटी पहने दुबले पतले की बात तो नहीं कर रहे,''

''हां, वही तो हैं महात्मा दादू। आपने शायद उनकी और ध्यान नहीं दिया'' वह व्यक्ति बोला ।

कोतवाल ने जल्दी से घोड़ा मोड़ा व वापस उस व्यक्ति के पास पहुंचे, जिसे शरीर पर अव भी चावुक के चिन्ह थे और सिर पर पटी बांध ली थी। ''क्या आप ही सन्त दादू हैं?'' कोतवाल बोला।

वह व्यक्ति मुस्कराया व कोतवाल को देख कर धीमें से बोला–––––'' इस शरीर को दादू भी कहते हैं।''

कोतवाल जल्दी से घोड़े से उतरा, उनके पैरों में गिर पड़ा। दुखःभरी आवाज में बोला,–––'' क्षमा कर दो महाराज! मैं तो आपको गुरू धारण करने आया था।''

दादू ने उसे प्यार से उठाया और बोले–––'' तो फिर यह दुख किस लिये? व्यक्ति जब घड़ा लेने जाता है तो उसे ठोक पीट कर देखता है, अगर ठीक लगे तभी लेता है तो जो गुरू जीवन का मार्ग दिखाने के लिये धारण करना है उसे ठोक पीट कर देख लिया तो उसमें हर्ज कैसा? थोड़ी देर बैठो। मैं यह झाड़ी परे फैंक लूं, फिर बैठकर बातें करेगें। ये झाड़ीयां और इनकं कांटे मार्ग चलने वालों को बहुत कष्ट देतें हैं।

जिस व्यक्ति में ऐसे गुण–––तप,त्याग, धैर्य, सहनशीलता,सेवा भाव, सन्तोष, विनम्रता हों। जिसे लोभ, अंहकार, क्रोध व मोह छूने न पाए और सब से वड़ी बात जिसका आचरण ही संदेश देता हो, उसे ही गुरू धारें। अगर ऐसा व्यक्ति नहीं मिलता है तो अच्छी पुस्तकों को ही गुरू मानकर उनका स्वाध्याय करें। गुरू गोविन्द साहब ने इसी लिये गुरू ग्रन्थ साहब को ही अन्तिम गुरू मानने का आदेश दिया।

आर्यसमाजियों ं जैसे उदार व्यक्ति दूसरे धार्मिक संगठनों में कम हीं देखने को मिलते है

आप किसी राधास्वामी को मिलेगे तो अक्सर उसके बच्चे भी राधास्वामी ही होंगे और वे बहुत गर्व के साथ इस बात को कहेंगे, यही हाल निरंकारीयों का है बाकी सिक्खों, ईसाईयों और मुसलमानों की तो बात ही क्या करनी, उनमें तो यह सम्भव ही नहीं कि बच्चा अपने पिता के धार्मिक विचारधारा को न अपनाये।

परन्तु हम आर्यसमाजियों में ऐसा कुछ नहीं। बहुत ही कम आर्य समाजी ऐसे होते हैं जिनके बच्चे भी आर्य समाजी होते हैं। मेरे अनुसार 100 आर्य समाजी परिवारों में मुश्किल से 5 ही बच्चे आर्य समाजी निकलते हैं, बाकी सभी बच्चे दूसरे मत मतानतरों में चले जाते है। इन में आधे से अधिक बच्चों ने तो आर्य समाज के दर्शन भी नहीं किये होते कारण माता पिता उन पर अपनी विचारधारा थोपने से परहेज करते हैं और यह साचते हैं कि बच्चे को अपना अध्यात्मिक रास्ता चुनने की स्वतन्त्रता होनी चाहिये। इसके परिणाम भी वैसे ही सुखद देखने को मिलते है।। कोई बच्चा शादी के बाद साई बाबा को मानने लगता है क्यूंकि उसकी पत्नि बचपन से ही सांई भक्त रही होती है। बहुत से पौराणिक पद्धति को मानने लग पढ़ते है क्योकि उस में कम समय में ही ईश्वर से मुलाकात हो जाती है। मन्दिर गये माथा टेका , प्रशाद की अदला बदली की और काम हो गया, जब कि आर्य समाज में काम लम्बा होता है।

मेरे एक मित्र जो की आर्य समाज के महत्वपूर्ण अधिकारी है उन्होने किसी खास पर्व पर अपनी अमेरिका से आई बहू से भजन गाने को कहा। उसने अपने ससुर जी का पूरा मान रखा और साई बाबा की स्तुती में भजन आर्य समाज के मंच से सुना दिया। पास में बैठे एक सज्जन बोले हद हो गई आर्य समाज के मंच से साइं बाबा का भजन, झट से दूसरे ने उनको समझाया–––अरे भाई फर्क क्या पड़ता है ओइम न कहा सांई कह दिया, बात तो भगवान को याद करने की है,। आप ही बताये क्या और कोई समाज ईतना उदार है?

एक और आर्य समाज के अधिकारी मेरे मित्र हैं, उन्होने अपनी बहु के स्वस्थ होने का प्रशाद बंटवाया। यहीं पर उनकी उदारता देंखे, बेटे या बेटियों के लिये तो प्रशाद बांटते हैं परन्तु बहु के लिये प्रशाद बांटा। प्रश्न उठा कि बहु कहां हैं तो उनहोने बिना किसी संकोच के बताया कि उसकी आस्था दरवार साहिब अमृतसर में है इस लिये वह धन्याबाद करने अमृतसर गई है।

मेरे एक और जानकार अक्सर आर्य समाज में मुख्य उत्सवों पर दिख जातें है। बातों बातों में ही उन्होने बताया कि मेरा एक बेटा इसकौन जाता है, दूसरा ब्रहमकुमारी है और बेटी और पत्नि सांई बाबा को मानती है। मैने कहा चलो अच्छा है आप तो कम से कम आर्य समाज में श्रद्धा रखते हैं। उन्होने जो कहा वह हमारे उदार चिन्तन को बताती है––––मैं भी सभी को मानता हूं जब आर्य समाज में कोई पर्व होता है तो यहां आ जाता हूं।

यह सच्च है कि हमें उदार संसकार मिले हैं। आज जब कि गुड़गांव में खुले में नमाज पढ़ने पर एक समुदाय वालों ने दूसरे समुदाय के विरूध युद्ध छेड़ा हैं हमारे सोच अलग है । डां अन्सारी व स्वामी श्रद्धानन्द परम मित्र थे। एक दिन डां अन्सारी ने स्वामी जी से कहा कि हमने आप के द्वारा बनाये गुरूकुल का बहुत नाम सुना है, हमारे मित्र गुरूकुल देखना चाहते हैं। स्वामी जी ने प्रसन्न होकर उनको अमन्त्रण दे दिया। उन्होने जैसा सुना था वैसा ही पाया। सुर्यास्त से पहले सब बिद्याथियों ने हवन किया, उसे देखकर सब मुसलमान अतिथी प्रसन्न हुये । तभी डां अन्सारी ने कहा स्वामी जी हमारी भी नमाज का वक्त हो गया है। स्वामी जी ने कहा सब और जगह है कहीं भी कर लें । आप का मन करता है तो यज्ञशाला में ही कर लें, कहीं दूर जाने की आवश्यकता ही नहीं । आपको भी भगवान का नाम ही लेना है। हमने संस्कृत में लिया आप अरवी में लेंगे। डां अन्सारी व उनके मुसलमान मित्र हैरान थे। सभी ने हाथ पांव धो कर वहीं य़ज्ञशाला में नमाज पढ़ ली। न नमाज पढ़ने से यज्ञशाला अपवित्र हुई न यज्ञशाला में नमाज पढ़ने से उन लोगों का ईमान घटां

स्वामी जी के इस उदार चिन्तन का प्रभाव ही था कि जामा मस्चिद में भाषण के लिये स्वामी श्रद्धानन्द जी को बुलाया गया व उन्होने गायत्री मन्त्र के जाप के पाद अपना भाषण दिया।

रजि. नं. : 4262/12

।। ओ३म् ।।

फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगड़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

DR RENU TAYAL AND MR SHAURYA DISTRIBUTED LANGAR IN SLUM AREA

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है :-

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

All donations to this organization are exempted under section 80G

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निमार्ण के 63 वर्ष

गैस ऐसीडिटी

शिमला का मशहूर कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489,Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552,
Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

ABHA POPLI

MRS CHUNNI

DR ANSHU SHARMA

SURINDER SOOD 1

MRS AND MR. O.P.NANDWANI

MUKESH GUPTA

Mrs Vinod Bala donated ration to bal Ashram

Shalini Nagpal D/o Dr Saroj Miglani performing Havan with the children

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870